बी.ए. पार्ट -III

हिन्दी (प्र०)/अष्टम पत्र : साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना)

अध्ययन सामग्री

दिनांक: 08.07.2020

डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग, भारती मंडन महाविद्यालय,
रहिका, मधुबनी

~~आचार्य~~

काव्य लक्षण का शेष.........

आचार्य दण्डी :-

आचार्य दण्डी ने रमणीय अर्थ वाली पदावलियों को काव्य मानते हुए कहा है कि - "शरीरंतावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना: पदावली।" आचार्य दण्डी ने अपनी परिभाषा में रमणीय अर्थ को ही इष्ट माना है। आचार्य दण्डी एक शास्त्रज्ञ होने के साथ - साथ एक कवि भी थे। इसलिए रस - चेतना पर उनका ध्यान केन्द्रित है। यथा :- अलंकृतमसंक्षिप्तम् रसभाव निरंतरम्। किन्तु यहाँ रस शब्द रसजन्य आनन्द के लिए नहीं होकर अलंकारजन्य चमत्कार से है।

आचार्य वामन

आचार्य वामन काव्य में अलंकारों की अपेक्षा गुण को अधिक महत्व देते हैं कि " काव्यं ग्राह्यमलंकारत् सौन्दर्यमलंकार:।" काव्य में सौन्दर्य दोषों के त्याग और गुणों के ग्रहण के कारण होता है। साथ ही वे आचार्य ~~भामह~~ भामह और आचार्य दण्डी के काव्य - लक्षण को भी समर्थन देते हैं।

आचार्य रुद्रट :-

अलंकारवादी आचार्य रुद्रट ने अपने लक्षण से सहितौ को निकाल दिया। अर्थात् वे शब्द और अर्थ दोनों को ही काव्य मानते हैं। उन्होंने कहा "ननु शब्दार्थौ काव्यम्।"

आचार्य कुन्तक

आचार्य कुंतक ने आनंदवर्धन तथा अभिनवगुप्त के काव्य लक्षण की व्याख्या करते हुए

Scanned with CamScanner

वक्रोक्ति को काव्य का व्यापक गुण माना है। 'वक्रोक्ति' को आचार्य कुंतक ने काव्य की आत्मा माना है। काव्य की भाव-पक्ष की कलापक्षीय व्याख्या करते हुए वे काव्य का लक्षण इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं।

"शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणी॥

कुन्तक मानते हैं कि वक्रतामय कवि-कौशलयुक्त मर्मस्पर्शी शब्दार्थ काव्य है। काव्यार्थ सहृदय आह्लादकारी, स्वस्पंद तथा रमणीय होता है। इस प्रकार कुंतक ने काव्य के वर्ण्य-पक्ष पर कम और अभिव्यंजना पक्ष पर अधिक बल दिया है।

आचार्य मम्मट

मम्मट ने अपने 'काव्य-प्रकाश' में काव्य-लक्षण को इस प्रकार उल्लेखित किया है।

"तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि।"

अर्थात उन्होंने काव्य में अलंकार की स्थिति वैकल्पिक मानकर उसे गौण बना दिया है। इसमें उन्होंने दोषों के अभाव और गुणों के भाव को प्रधानता प्रदान की है। अपनी सरलता के कारण यह काफी लोकप्रिय हुआ। वास्तविकता में इसमें मौलिकता कम और समझौता की प्रवृत्ति अधिक दिखाई देती है। वे अलंकारवादियों और गुणवादियों दोनों को खुश करना चाहते थे। उन्होंने रसवाद का भी हमेशा समर्थन ही किया।

क्रमशः